

महावाणी – विश्वकल्याण की वाणी

२९/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी देखें अपना मूलस्वरूप... चमकता हुआ सितारा.. अपने सिंहासन पर विराजमान है... सभी अपने लाइट को देखें... अपने मूलस्वरूप अवस्था के लाइट को इमर्ज करें... अपने मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखें... अनुभव करें हर कोई अपने मूलस्वरूप को... क्या अनुभव हो रहा है.. सभी उस अनुभव को फील करें।

जितना-जितना आप आपके मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखते जाएंगे, उतनी-उतनी आप आत्मा की लाइट बढ़ती जाएगी। आपका सारा खेल आप आत्मा के लाइट का है। अगर आप आत्मा की लाइट ऑन है, तो आपसे सदैव हर कर्म में सहजता होगी; कभी भी किसी भी कर्म में आपको कठिनाई नहीं होगी। जब-जब आपकी लाइट, आप आत्मा की लाइट ऑन नहीं होती और आप किन्हीं कर्मों में उतरते हो, तो उस कर्म में आपको कठिनाइयां आएगी, परेशानियां आएगी। उस कर्म में, पूर्ण करने में आपको समय लगेगा, आपका ब्रेन थक जाएगा, आपका शरीर थक जाएगा, आपके कर्मेन्द्रियां आपको साथ नहीं देगी। इसलिए परमात्मा ने बहुत सहज विधि दी है—हर कर्म लाइट में करना, अपने आत्मा की लाइट को ऑन करते हुए हर कर्म करना। अगर आप लाइट को ना देखते हुए कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करेंगे, तो जरूर आपका शरीर थकेगा, आपका ब्रेन थकेगा, आपकी सभी कर्मेन्द्रियां थकेगी; क्योंकि आपने अपने आप को देह समझ लिया। और जब-जब आप बॉडी कॉन्ससियसनेस में रहकर, देह के भान में रहकर कोई भी कर्म करते हो, फिर कोई भी छोटा सा भी कर्म क्यों ना हो, आपको अवश्य

थकान आएगी, आपका शरीर जल्दी थकेगा। आप आत्मा की लाइट में इतनी ताकत है कि अगर वो लाइट ऑन रहे, और आप नॉनस्टॉप भी २४ घंटा आपके शरीर के द्वारा कर्म करा सकते हो। पर यह कब होगा? जब आत्मा की लाइट सदा ऑन रहेगी। हर कोई अपने से चेक करे कि आपको आपके शरीर के किसी भी कर्मेन्द्रियों में तकलीफ या दर्द कब-कब होता है? आप चेक करें आपकी स्थिति किस प्रकार की होती है और तब-तब आपके शरीर में आपको कठिनाई या परेशानी या दर्द-कष्ट होते हैं। आप चेक करें कि क्या आप आपके मूलस्वरूप स्थिति में रहकर कर्म करते हो?

कोई भी कभी भी यह एक एक्सपेरिमेंट करे—जब भी कभी आपका शरीर अति थका हुआ हो, उस समय अगर आप आप आत्मा की लाइट को ऑन करें, आप देखना आपके सभी स्थूल कर्मेन्द्रियों में क्या परिवर्तन आता है। कुछ सेकंड के लिए बैठकर अपने मूलस्वरूप को सिर्फ देखना। जब-जब आपको किसी भी परिस्थिति में परेशानी, तकलीफ, कष्ट, दुख-दर्द या शारीरिक परेशानी या मानसिक परेशानी सामने आती है, आपको सिर्फ कुछ सेकंड का पॉज लेके बैठकर अपने मूलस्वरूप को, आपके आत्मा की लाइट को सिर्फ देखना है। यह पावर है आप आत्मा के लाइट की। जैसे ही आप आप आत्मा के मूलस्वरूप को देखते जाते हो, आपके सभी सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां और स्थूल कर्मेन्द्रियों की चार्जिंग अपने आप होती जाती है। जैसे मोबाइल की बैटरी डिस्चार्ज होने पे आपको उसे चार्जिंग करना पड़ता है तब ही वो काम कर सकता है, उसी प्रकार से सभी सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों द्वारा और स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा आप आत्मा को सदैव सही रूप से कर्म करा लेने हैं, तो आप आत्मा को आपकी लाइट सदा ऑन रखनी होगी।

हर कोई आत्मा अपने जीवन में एक धारणा लाए—हर कर्म से पहले, हर कर्म से पहले कम से कम एक मिनट के लिए हर कोई अपनी उस मूलस्वरूप को, अपनी आत्मा की उस लाइट को देखे। कर्म से पहले एक मिनट अपने मूलस्वरूप को देखना और कर्म पूरा होने के बाद एक मिनट के लिए

फिर से अपने मूलस्वरूप को देखना। अगर कोई भी आत्मा यह अभ्यास दिल से करे, तो उसको बहुत जल्दी यह अनुभव होता जाएगा कि आप आत्मा की लाइट से आपकी कर्मेन्द्रियां कैसे कर्म करती हैं। परमात्मा ने बेहद सुंदर रचना रखी है। किसी भी प्रकार से कभी भी किसी को कोई तकलीफ नहीं होती। बस वह अस्तित्व अपने मूलस्वरूप में रहकर कर्मों में उतरे। कर्म से पहले एक मिनट और कर्म के बाद का एक मिनट जब कोई अपनी मूलस्वरूप अवस्था को, अपनी लाइट को देखेगा, उसको उस कर्म में जो-जो उसके सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियां, उनसे जो भी कर्म हुआ, जो-जो ऊर्जा उनके द्वारा कर्म करने में लगे, वह सारी ऊर्जा सिर्फ इस एक-एक मिनट के मूलस्वरूप को देखने से तुरंत रिचार्ज हो जाती है। कोई भी इसका प्रैक्टिकल अनुभव कर सकता है। फिर किसी का कर्म पांच मिनट का हो, किसी का कर्म एक घंटे का हो, या किसी का कोई कर्म लगातार चार-पांच घंटे का हो, बस कर्म से पहले वाला एक मिनट और कर्म के बाद वाला एक मिनट अगर कोई संभाले, तो उस अस्तित्व को, उस आत्मा को कभी यह महसूस ही नहीं होगा कि उसके कर्मेन्द्रियों द्वारा कोई कर्म हुआ या उसने कोई कर्म किया। क्योंकि जैसे आपने आत्मा की लाइट, आत्मा की लाइट का फोकस ऑन किया, तत्क्षण ऊर्जा मन-बुद्धि-संस्कार में गयी, सभी गुण-शक्तियां, दिव्य गुणों में गयी, सभी पांच तत्वों में गयी, और वहां से आपके सूक्ष्म शरीर में पहुंची, और वहां से आपके स्थूल शरीर में कर्म करने के लिए तैयार रही; और उसी ऊर्जा के द्वारा आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराए जाएंगे और कर्म पूरा होने के बाद एक मिनट फिर से मूलस्वरूप को देखने से क्या होगा? जो ऊर्जा आपका किसी भी कर्म करने में आपके सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा लग गयी, वह ऊर्जा फिर से एज इट इज़ उस एक मिनट में रिफिल हो जाती है। यह ताकत है आत्मा के लाइट की।

और यह जो कुल मिला के दो मिनट का आप आत्मा ने आप आत्मा के मूलस्वरूप को देखने का अभ्यास किया, उससे और क्या-क्या होगा? सबसे पहले आपके कर्म अति सहजता पूर्वक होंगे,

आपके हर कर्म में पूर्ण सहजता होगी। आपका हर एक कर्म में, हर एक आपकी जो भी एक्शन होगी, वह आपको अति सहज लगेगी। फिर अगर किसी का कर्म कोई भारी चीज को उठाने का भी क्यों ना हो, पर अगर किसी ने एक मिनट अपनी लाइट को देखा और कोई भी चीज को उठाने का कर्म किया, उसको यह महसूस भी नहीं होगा कि उसने इतना भारी वजन उठाया। कोई भी कभी भी इसका प्रैक्टिकल अनुभव कर सकता है। आप थकते कब हो? जब आप आपको देह समझते हो। जब-जब कोई भी अपने को पांच तत्वों का देह समझता है, उसी समय उसके अंदर उसके सभी कर्मेन्द्रियों में, देह के कर्मेन्द्रियों की थकान शुरू हो जाती है। पर जब आप अपने सोल कॉन्ससियसनेस में रहते हो, जब-जब आपको यह सिर्फ अगर स्मृति भी रहती है, भल आपने आपका मूलस्वरूप को कंटीन्यूअस ना भी देखा हो, पर जब आपको किसी कर्म में यह सिर्फ आप आत्मा की स्मृति भी रहती है कि— आप एक लाइट हो और सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म अभी करने हैं, सिर्फ इतनी सी एक स्मृति से आपको कभी भी आपके शरीर में थकान नहीं आएगी।

थकता कौन है? हर कोई चेक करें। क्या आत्मा कभी थक सकती है? क्या आत्मा अगर जागृत है, तो क्या उसका इंस्ट्रूमेंट— देह कभी थक सकता है? थकान यह एक ऊर्जा है। वह कब आती है? जब आपका कोई मायावी अस्तित्व इमर्ज हो जाता है जो आपको कहता है— “आपने कितना सारा काम किया! आप तो कितना सारा दौड़ते रहते हो!” यह आपकी आपके मायावी स्वरूप के आपके साथ ही मन ही मन चर्चा चलती रहती है। वह मायावी अस्तित्व आपको विचार देता रहता है— “दिन भर तो कितना काम होता है, कितनी सारी सेवाएं होती है!” यह जो विचार देने वाला अस्तित्व है, यह संपूर्ण मायावी अस्तित्व है। आप अगर उस अस्तित्व के एक भी विचार को एक्सेप्ट नहीं करेंगे, तो उस मायावी अस्तित्व की किसी भी प्रकार की ऊर्जा आपके ऊपर प्रभावित नहीं करेगी। उस मायावी अस्तित्व की ऊर्जा, थकान के रूप में आपके सूक्ष्म और स्थूल शरीर को प्रभावित करती है। आप

आत्मा, उसके पास प्रचंड, विराट ताकत है; वह बहुत मजबूत है, बहुत शक्तिशाली है। पर आप आपके मायावी अस्तित्व की ही बातों पर विश्वास करते हो और उस मायावी अस्तित्वों के विचारों में आप फंस जाते हो; आपने ही आपका मायावी जाल रचना शुरू कर दिया।

अगर कोई भी अस्तित्व अपने मूलस्वरूप में रहकर कर्म में उतरे, तो उस अस्तित्व को वह कर्म पूरा भी हो जाए, फिर भी उसको वह पता भी नहीं चलेगा; क्योंकि जैसे ही आपने आप आत्मा की लाइट ऑन कर दी, उस लाइट की ताकत से सभी कर्मेन्द्रियों द्वारा आसानी से कर्म कराए जाएंगे। आप आत्मा के पास कितनी सारी गुण-शक्तियां, अष्ट-शक्तियां— इस रूप में सभी शक्तियां सेवाधारी हैं। आप आत्मा को आपकी स्थिति में रहकर आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों को ऑर्डर देके चलाना आना चाहिए। अगर आपका मन, जो आपका एक सूक्ष्म कर्मेन्द्रिय है, अगर उसको किसी भी प्रकार के मायावी अस्तित्व ने परवश किया और उसने मन में विचार डाले, आपका मन थक जाएगा; और जैसे ही मन थक गया, आपके संस्कारों में थकान पहुंच गयी, आपके सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां, आपके सभी स्थूल कर्मेन्द्रियों में थकान पहुंच गयी। आप नहीं समझते हो कि यह सारा खेल अति सूक्ष्म लेवल पर चलता है।

मान लो कभी कोई अस्तित्व उसके सभी शरीर के कर्मेन्द्रियों द्वारा १०-१२ घंटे की ड्यूटी की और उसके कर्मेन्द्रियों में थकान आयी, और अभी उसकी अवस्था ऐसी हुई कि बस उसको यह लग रहा है कि वो अभी शरीर को सुला दे। और जैसे ही वो सुलाने जा ही रहा था, उसी समय कोई अति इमरजेंसी परिस्थिति घर में खड़ी हुई—कहां पर कुछ हो गया, कहां कुछ बाहर आग लग गयी या कुछ और इमरजेंसी बात अचानक सामने आ गयी, तो आपको क्या लगता है? या फिर कुछ भूकंप जैसे बात-घटना उसी स्थान पर शुरू होने लगी, तो आपको क्या लगता है? क्या वह व्यक्ति जिसने १०-१२ घंटे कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करके उसके कर्मेन्द्रियों में थकान आयी, जो शरीर को सुलाने ही वाला था,

क्या वो उसके शरीर को सुला पाएगा? फिर क्या वो सो जाएगी या वो और जागृत होगा? अगर बाहर ऐसे कोई विपरीत परिस्थिति खड़ी हुई, तो वह व्यक्ति पूर्ण रूप से जागृत होगा। फिर उसके पास ताकत कहां से आयी? उसके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों में ताकत कहां से आयी? यह सारा मन का खेल है। आप इस खेल को अगर समझ लेंगे, तो आप इस खेल में कभी भी नहीं अटकेंगे; आप आपके हर पार्ट को मौज से एंजॉय करेंगे। क्योंकि सारा खेल आपके मायावी अस्तित्व के द्वारा खेला जा रहा है। वही आपको कह रहा है— “अभी शरीर बहुत थक गया है, चलो अभी बैठ जाना है, चलो अभी शरीर को सुला देते हैं, चलो अभी शरीर को बहुत भूख लगी है।” क्या कभी उस अस्तित्व ने आपको कहा है कि— “चलो अभी बिना पानी पिए, बिना शरीर को अन्न दिए चार घंटा तपस्या में बैठेंगे” कभी उस अस्तित्व ने आपको कहा है कि— “बिना कुछ खाए-पिए अभी लगातार एक घंटे के लिए या दो घंटे के लिए हम सकाश में शरीर को बिठाएंगे”। हर एक बार आपके आपके मायावी अस्तित्व ने जो आपको विचार देता है, और अगर वह विचार आपने स्वीकार किया, तत्क्षण आपको आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों में उस मायावी अस्तित्व की ऊर्जा मिलेगी।

आप आत्मा अति पावरफुल हो, बस आप आपके ताकत को नहीं जानते। परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना जो आत्माएं हैं, अगर वह आत्मा जागृत हो जाए, तो उसके पास इतनी ताकत है कि वो अपने हर एक सेल को, हर एक कर्मेन्द्रियों के, शरीर के हर एक सेल को वो कॉन्ससियस्ली चला सकते हैं। तो सभी आत्माएं अपनी आत्मिक ताकत को जागृत करें। हर एक कर्म से पहले और कर्म पूरा होने के बाद सिर्फ एक मिनट का, बैठकर, सिर्फ अपने सितारा लाइट मूलस्वरूप को देखने का अभ्यास करें। आप नहीं जानते वह एक मिनट में आपकी सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों की कितनी गुना चार्जिंग हो जाएगी। बस हर किसी को अपने कर्म से पहले और कर्म के बाद का एक मिनट संभालना होगा।

आपको आपके अंदर परिवर्तन पूर्ण रूप से दिखता जाएगा—कैसे-कैसे आपकी आप आत्मा की, आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियों के ऊपर कंट्रोल आ रहा है।

आप आपको देह कभी समझना भी नहीं। देह में भल रहकर सदैव देह को इंस्ट्रूमेंट देखना है कि— “यह परमात्मा की कृपा से मुझ आत्मा को यह देह रूपी इंस्ट्रूमेंट साधन मिला है, मुझ आत्मा को अपना कल्याण करने के लिए, मुझ आत्मा को अपना परिवर्तन करने के लिए।” जब-जब आप देह भान में आओगे, तब-तब आपको हर प्रकार की कठिनाई और परेशानियां आएंगी ही आएंगी; क्योंकि देह यह कलयुग का है, मनुष्य देह है। इसलिए सदैव इसी भान में रहना कि— “मैं आत्मा इस देह में एक मेहमान हूँ, मुझ आत्मा के कल्याण-अर्थ और परिवर्तन-अर्थ यह देह रूपी साधन मुझे मिला है इस संगम युग में। इस देह को लेकर मुझ आत्मा को मेरा कल्याण करना है।” जितना-जितना इस बात की स्मृति आपको रहेगी, उतना-उतना आप आपके देह भान से परे जाते जाओगे। भल जब-जब देह में कितनी भी परेशानी या थकान आए, आप बस आप आत्मा की लाइट को ऑन करना और बुद्धि से इसी स्मृति में रहना— “यह देह सिर्फ एक इंस्ट्रूमेंट है, मुझ आत्मा को कल्याण करने के लिए, मुझ आत्मा का परिवर्तन करने के लिए मिला हुआ यह साधन है।” जैसे ही आपकी यह स्मृति जागृत हो जाएगी, आपका इंस्ट्रूमेंट फिर से कर्म के लिए सज्ज हो जाएगा—फिर वह कर्म किसी भी प्रकार का बाहरी फिजिकल कर्म हो या तपस्या के लिए आपको आपके शरीर को तैयार करना हो, लगातार तपस्या में बैठने के लिए।

तो आज से सभी का यह एक होमवर्क है—हर कर्म से पहले और हर कर्म के बाद एक-एक मिनट अपने मूलस्वरूप को देखना बैठकर। यह अभ्यास सभी आत्माएं अंत तक शुरू रखना, अंत तक कायम रखना; क्योंकि आपका वह एक मिनट आप नहीं जानते आपको किस प्रकार का परिवर्तन आप में लाएगा। वह अंत में आपको रिजल्ट दिख जाएगा।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः